Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Scanned by CamScanner

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Scanned by CamScanner

12. Effect of Preksha Meditation on Cognitive Distortion 155-174
Dr Samani Sulabh Pragya

13. प्रेक्षाध्यान का महाविद्यालयी छात्राओं की सृजनात्मक क्षमताओं पर प्रभाव का अध्ययन 175-183
डॉ. अशोक भास्कर

Section-2 (A) : Indian Culture

14. बीकानेर संभाग में प्राप्त संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक तत्व 187-194
डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

15. अहिंसक जीवनशैलीः सामाजिक समरसता का आधार गांधीयन परिप्रेक्ष्य 195-207
डॉ. जुगलकिशोर दाधीच

16. वैदिक संस्कृति में तप की महत्ता एवं उपादेयता 209-221
डॉ. सुनिता इंदोरिया

17. कालिदास के साहित्य में सामाजिक समरसता 223-229
डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

18. आचार्य महाप्रज्ञ का शिक्षा दर्शन 231-244
डॉ. हेमलता जोशी

Section-2 (B) Miscellaneous

19. Choice Based Credit System: A new paradigm Shift in Indian University Platform 247-260
Dr Bhabagrahi Pradhan

20. Various Types of Cooperation in Rural Communities of Ladnun, Rajasthan: A study 261-278
Dr Bijendr Pradhan

21. Diasporic Conditions and the Aporia of Female Sensibility in Jhumpa Lahiri's The Namesake. 279-285
Dr Govind Sarswat

Scanned by CamScanner

बीकानेर संभाग में प्राप्त संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक तत्व

*****

*डॉ समणी संगीतप्रज्ञा

सारांशिका

प्राचीन खण्डहरों, स्मारकों तथा मुद्राओं के समान बीकानेर संभाग के इतिहास की जानकारी के लिए सर्वाधिक विश्वस्त एवं प्रामाणिक स्रोत यहां उपलब्ध अभिलेख हैं। बीकानेर में यह अभिलेख सैकड़ों की संख्या में प्राप्त हुए है, पर ये अभिलेख बहुधा शिलाओं, बावड़ियों, कूपों तथा पादुकाओं के मध्य स्थापित शिलाओं पर उत्कीर्ण मिलते हैं। इन अभिलेखों के विषय भिन्न–भिन्न हैं–जिनमें राजकीय वर्णन एवं वंश–वर्णन प्रमुख हैं। कई अभिलेख तो ऐसे भी हैं जिनमें न केवल ऐतिहासिक घटनाओं का बोध होता है अपितु तत्कालीन कई अज्ञात रचनाओं की शैली, लिपि एवं भाषा का ज्ञान भी होता है। प्रायः सभी राजपूत–राजवंशो के अथवा उनके समय के अभिलेख मिलते है, जो तिथिक्रम को निर्धारित करने तथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों की जानकारी के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

सम्बद्ध शब्द : *रीति–रिवाज, परम्पराएं, मान्यताएं, लोक–विश्वास।*

---

*सह-आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, प्राकृत एव संस्कृत विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं 341306 (राजस्थान)

Scanned by CamScanner